Name - Ishika Choudhary

Roll No - SKt/19/26

Paper Name - Acting And Script Writing

Paper Code - 12133901

year - IInd year

Sem - IIIrd Sem

• अभिनय कितने प्रकार के होते है-

अभिनय चार प्रकार के होते है-

- आङ्गिक
- वाचिक
- सात्विक
- आहार्य

अभिनय के इन्ही प्रकारो का प्रयोग मे सामाजिक को लगता है कि हम वस्तुत: उस जमाने (युग) और परिस्थिति में पहुँचकर पात्रो के व्यवहारो का अनुभव कर रहे है

• आङ्गिक अभिनय-

अभिनेताओ के द्वारा हाथ पैर, कमर, सिर आदि की चेष्टाओ के रुप मे प्रदर्शित किया जाता है।

इनके तीन भेद है- • शारीरिक
• मुखगत
• चेष्टाकृत

इनके भी भेदपदो में अभिनय का वैविध्य ज्ञात होता है।

• वाचिक अभिनय -

इनके अंतर्गत काव्य के गुण, छन्दोविधान, दोष, अलंकार तथा भाषा निहित है। अभिनेताओं के द्वारा नाटक का अंश इसी अभिनय के द्वारा प्रकट होता है। संस्कृत तथा प्राकृत भेदों का विवेचन इसी अभिनय कि दृष्टि से किया था कुछ प्राकृत मे शौर सेनी महाराष्ट्री मगधी आदि रूपों का प्रयोग करेगा।

• सात्विक अभिनय -

जब किसी भाव की अभिव्यक्ति होती है उसे सात्विक अभिनय कहते है शरीर मे सात्विक की वृद्धि से स्वभावतः जन्म लेने के कारण ये 'सात्विक' गुण या अभिनय कहलाते है जिससे रसोद्भावन मे सुविधा होती है।

आहार्य अभिनय -

किसी व्यक्ति कि वेश-भूषा कि सजावट व पहनावे को आहार्य अभिनय कहते है जिसे भारत मे नेपथ्य-रचना कहा है जिसे भारत मे नेपथ्य रचना पात्रों मे रूप मे समझा जाता है इसके पुस्त अलंकार, अगंरचना और संजीव मे चार प्रकार कहे गए है।

Harshakumari

इस आभिनय का सम्बन्ध रंगमच से है क्योकि इसका विधान नेपथ्य मे पात्रो की सजावट के रूप मे होता है। इस प्रकार आभिनय के विविध पक्षो का निरूपण हुआ है।

संस्कृति नाट्यशास्त्र ने रङ्गमंच की व्यवस्था पर विस्तृत विचार किया है विष्णुधर्मोत्तरपुराण सगीतमकरन्द, भावप्रकाशन, सगीतरत्नाकर, मानसार आदि ग्रन्थो में भी नाट्याभिनय के लिए रंगमंच के आकार-प्रकार का विवरण है नाट्यशास्त्र तो इस विषय का महाकोश है।